November 2014

TODAY

(NEWSLETTER OF EURASIA REIYUKAI)

Year : 2, Vol. 17 www.eurasiareiyukai.com

महागुरू काकुतारो कुबोजी की ७१वीं पुण्यतिथि के स्मरण समारोह १८ नवम्बर २०१४ के दिन अपनी मिहाता शाखा एवं समाज विकास केन्द्र में सदस्यों के साथ-साथ सहभागी होकर महागुरूजी के प्रति कृतज्ञता लौटायें।

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी द्वारा विभिन्न मिलन समारोहों में प्रदान किये गये मार्गनिर्देशन

✡ हम सभी के साथ हीरा की तरह का महत्वपूर्ण खजाना है, वह कृतज्ञता है और यही रेयूकाई शिक्षा का आधार है। इसे कार्यान्वयन कर कार्यान्वयन कराने का मौका पाकर स्टेप-अप होने का मौका पाने पर ही केवल क्षमा की भावना जागृत होती है।

✡ हमलोगों ने अभिभावकों से जीवन और शरीर प्राप्त करने का मौका प्राप्त किया है और पूर्वजों से प्राप्त किये कर्म के सम्बन्धों को वहन कर रहे हैं। इस संसार को बचाने के लिए हम महत्वपूर्ण खजाना-जिम्मेवारी और कर्तव्य लेकर मानव के रूप में जन्म लेने का मौका प्राप्त किये हैं।

✡ कृतज्ञता के साथ अभ्यास करने का मौका प्राप्त करें, कृतज्ञ होकर कार्यान्वयन करें, कार्यान्वयन कराकर कृतज्ञता के परिणाम दिखायें।

✡ जिस तरह मछली को पानी के अंदर रहने पर भी उसे पानी में रहने का आभास नहीं होता और वह उसके प्रति कृतज्ञ नहीं होती, उसी प्रकार मनुष्य हवा में है, फिर भी उसे स्वयं हवा के अन्तर्गत रहने की बात महसूस नहीं हो रही है और वह उसके प्रति कृतज्ञ भी नहीं है। हम सब भी बुस्सोगोनेन की शिक्षा के 'म्यो हो' के संसार में हैं, फिर भी हमें महसूस नहीं हो रहा है और उसके प्रति हम कृतज्ञ भी नहीं हैं। इसलिए हमें कृतज्ञता की भावना लेकर अभ्यास करने का मौका प्राप्त करना होगा। कृतज्ञ होने की बात की शिक्षा देना ही रेयूकाई की शिक्षा है।

✡ हमारे साथ षड्इन्द्रियां हैं। उन षड्इन्द्रियों में किसी से कुछ निकलता है तो किसी से शरीर में कुछ जाता है। मुंह से निकलता है तो, आंख-कान और नाक से अंदर जाता है। उस प्रकार अंदर प्रवेश करने की बातों को मन रूपी फिल्टर से छानने का मौका पाकर सही निर्णय लेने की शक्ति अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति होती है। वह ज्ञान ही बुद्ध ज्ञान है।

✡ जीवन और भाग्य विकास के लिए हमारे गुरू आन् र्यू ग्यो तोकु जेन् शी एवं गुरूको रोकु ज्यू तोकु जेन् न्यो जी लोगों की शिक्षा का रक्त हम लोगों में प्रवाहित हो रहा है। उसका अर्थ शिक्षा के कैल्सियम को सदस्यों के समक्ष प्रवाहित करने का मौका पाकर संचित पुण्यफल को कृतज्ञता सहित गुण लौटाने का मौका प्राप्त करना होगा। इसलिए कृतज्ञता की भावना से इस संसार को बचाकर समाज में सदुपयोग होने वाला व्यक्ति- आज का स्वयं बनकर औरों को भी आज का व्यक्ति बनाने का मौका प्राप्त करना होगा, यही मिलियन अभियान है।

✡ जिस प्रकार माता बच्चे को जन्म देकर उसकी परवरिश करते हुए स्वयं भी परवरिश होने का मौका प्राप्त करती है, अर्थात् माता को भी अपने बच्चे के अस्तित्व के प्रति कृतज्ञ होना पड़ता है, उसी प्रकार सदस्यों की परवरिश करने के अनुरूप उसी दौरान ओया की भी परवरिश होती है। ओया भी सदस्यों से बहुत कुछ सीखते हैं। इसलिए सदस्यों को गुरू के रूप में लेकर स्वयं सीखने का मौका प्राप्त करने के प्रति कृतज्ञ होने की बात सिखाना ही रेयूकाई शिक्षा है।

✡ आध्यात्मिक संसार में रहने वाले पूर्वज उजियाले की चाह कर रहे हैं। इसका मतलब हाल ही में सदस्य बने लोगों के घर में सोकाइम्यो को रत्नस्तूप के रूप में स्वागत करने का मौका प्राप्त करने के बाद उससे आध्यात्मिक संसार में सूई के सामने वाले भाग जैसा पतला प्रकाश रिफ्लेक्ट होकर पहुंचता है एवं उस प्रकाश को देखकर उस सोकाइम्यो के साथ कर्म के सम्बन्ध रहने वाले असंख्य पूर्वज सोकाइम्यो में विराजमान होते हैं। इस तरह मिचिबिकी कर सोकाइम्यो का स्वागत कर काकुचो (पूर्वजबही) में पूर्वजों का स्वागत किया पुण्यफल संचित होकर सूई के सामने वाले भाग से बढ़कर आध्यात्मिक संसार और प्रकाशमय होता है तथा वहां रहने वाले पूर्वज वर्तमान में आने का मौका प्राप्त करते हैं।

✡ विश्व की वर्तमान स्थिति को देखने पर चार तरह की समस्याएं हैं। वे हैं :- जलवायु परिवर्तन की समस्या, लोहा व इस्पात आदि कल-कारखानों में कोयला जलाने से होने वाली यम २.५ की समस्या, इबोला की समस्या तथा धर्म के नाम पर निर्मम हत्या कर आतंक फैलाने की समस्या। इसे नेन्गान के होम्यो का कार्यान्वयन करने का मौका पाकर स्वयं सचेत होकर जनजेतना का प्रसार कर इन समस्याओं से लोगों को मुक्त कराकर अपनी संतति (आगामी पीढ़ी) को अच्छा संसार हस्तांतरित करने का मौका प्राप्त करना होगा।

अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम संपन्न

२१ सितम्बर २०१४ को अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर एक दिन भी हो सके शीघ्र विश्वशांति कायम हो, ऐसी कामना कर, विश्वशांति का लक्ष्य लेकर यूराशिया रेयूकाई ने अपनी सम्पूर्ण मिहाता शाखा एवं समाज विकास केन्द्रों नेपाल, भारत, बांग्लादेश और म्यानमार में विभिन्न कार्यक्रम जैसे : वृक्षारोपण, नागरिक साफ-सफाई, शांति रैली, दीप प्रज्ज्वलन एवं जनचेतना मूलक कार्यक्रमों का आयोजन भव्य रूप से सम्पन्न किया।

श्रद्धांजली समारोह संपन्न

स्वर्गीय कोतारो आदाची विगत १४ सितम्बर २०१४ को ५७ वर्ष की अल्पायु में आध्यात्मिक संसार में लौट गये। उनके स्मरण में १७ सितम्बर २०१४ को सम्पूर्ण मिहाता शाखा एवं समाज विकास केन्द्र नेपालगंज (नेपाल) में श्रद्धांजली सभा आयोजित की गयी। आदाची जी ने अपने जीवन के २४ वर्ष तक रेयूकाई प्रधान कार्यालय जापान का प्रतिनिधि बनकर यूराशिया रेयूकाई के विकास में गंभीरतापूर्वक लगकर, दत्तचित्त रहकर, उदाहरणीय बनकर सदस्यों एवं लीडर्स में काफी गुण और अच्छाइयां छोड़ी हैं। वह एक दयालु, ईमानदार और मिलनसार स्वभाव वाले व्यक्ति थे।

खुशी का अनुभव

यूराशिया रेयूकाई १५वीं शाखा के
होजाशु श्री प्रमोद न्यौपाने
ओया : श्री माधव प्रसाद खतिबड़ा
क्षेत्र : भीमटार, सिन्धुपाल्चोक (नेपाल)

सभी को नमस्कार !

विगत ९ अगस्त २००९ को मेरे मिचिबिकी ओया श्री माधव प्रसाद खतिबड़ा के माध्यम से मुझे रेयूकाई की सदस्यता ग्रहण करने का मौका प्राप्त हुआ। सदस्यता ग्रहण करने का मौका प्राप्त करने के बाद ओया जी के मार्गनिर्देशन अनुसार विभिन्न मिलनों में भाग लेने का मौका पाकर नमस्कार, धन्यवाद एवं क्षमा करें जैसी बातें अपने वास्तविक जीवन में लागू करने का मौका प्राप्त किया हूँ। अपने घर में सोकाइम्यो की स्थापना कर अपने सदस्यों के घर में भी सोकाइम्यो की स्थापना करने का मौका पाकर पूर्वज स्मरण करने का महान् मौका प्राप्त कर रहा हूँ। अपने में व्याप्त बुरे चरित्र में परिशोधन करते हुए, सीखने की भावना, कृतज्ञता की भावना और क्षमा की भावना को अपने वास्तविक जीवन में लागू करते हुए, अपने सदस्यों के साथ-साथ स्वयं भी परवरिश होने का मौका प्राप्त कर रहा हूँ। गोहोम्यो आत्माग्रहण समारोह में भाग लेने का मौका पाकर १०० दिनों का अभ्यास १०० दिनों में ही पूरा करने का मौका पाकर अपने हाथों से अपने सदस्यों के घर में सोकाइम्यो स्थापना करने का मौका प्राप्त कर रहा हूँ। विभिन्न मिलनों में भाग लेने का मौका पाकर, लीडर्स के मार्गनिर्देशन ग्रहण करते हुए अपने में रहने वाले ज्ञान और दक्षता को सदस्यों में भी सिखाने का मौका प्राप्त कर रहा हूँ। स्वयं युवा होने के कारण इस देश में जन्म लेने पर गर्व करते हुए विदेश जाने वाले युवकों को अपने देश में ही मेहनत कर आय अर्जित करते हुए देश के प्रति कृतज्ञता लौटाने के लिए उत्प्रेरित करने का मौका प्राप्त कर रहा हूँ। विभिन्न क्षेत्रों में नशीली औषधियों की आदत में फंसकर बर्बाद होने वाले युवकों को रेयूकाई शिक्षा के माध्यम से बार-बार मिलनों में सहभागी कराकर उन्हें नशीली औषधियों का परित्याग कर अपने अभिभावकों एवं समाज के प्रति कृतज्ञता लौटाने के लिए प्रेरित करने का मौका प्राप्त कर रहा हूँ। साफ-सफाई को स्वयं लागू कर विभिन्न संघ-संस्थाओं के साथ सामूहिक कार्य करते हुए गांव, मोहल्ला, बाजार को साफ रखते हुए अपने सदस्यों के साथ-साथ प्रकृति के प्रति कृतज्ञता लौटाने का मौका प्राप्त कर रहा हूँ। अपने तथा अपने सदस्यों के गोहोजा में सोकाइम्यो विराजमान कराकर, पूर्वजबही में आध्यात्मिक संसार में रहने वाले ३०० से ज्यादा पूर्वजों के नाम लिखने का मौका पाकर पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता लौटाते हुए आध्यात्मिक संसार को बचाने का महान् कार्य करने का मौका प्राप्त कर रहा हूँ। चलें मिलियन, अभियान को अपने हाथ-पैर और शरीर का प्रयोग कर रेयूकाई शिक्षा के माध्यम से समाज में परिवर्तन करते जाने का मौका प्राप्त कर रहा हूँ। इस महान् रेयूकाई शिक्षा और संस्थापक अध्यक्ष जी के मार्गनिर्देशन को स्वयं ग्रहण करने का मौका प्राप्त कर रहा हूँ। इस तरह की महान् रेयूकाई शिक्षा के प्रति अंतर्हृदय से निरंतर अभ्यास में लगे रहने की प्रतिज्ञा करता हूँ।

धन्यवाद, नमस्कार !

हस्तकला प्रशिक्षण संपन्न

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष दंपती जी लोगों की दया को ग्रहण करने का मौका पाकर ११, १२, १३ सितम्बर २०१४ को समाज विकास केन्द्र सानेपा (नेपाल) में एवं १९, २० व २१ सितम्बर २०१४ को समाज विकास केन्द्र सिलीगुड़ी (भारत) में मुमा हिरोको मासुनागा जी की सक्रियता में विभिन्न हस्तकला की सामग्रियां बनाने का प्रशिक्षण संपन्न हुआ। उक्त प्रशिक्षण में सम्पूर्ण मिहाता शाखा और समाज विकास केन्द्रों से कुल ३३ महिलाएं सहभागी हुईं। कामना कर, भावना लगाकर कोई चीज निर्माण करना पड़ता है, कोई चीज बनाने का अर्थ उसे जीवन्त बनाना है, आकार प्राप्त की हुई चीज बनाना एक बच्चे की परवरिश करने जैसा है, सहभागियों को संस्थापक अध्यक्ष जी ने ऐसा महत्वपूर्ण मार्गनिर्देशन प्रदान किया।

सानेपा, नेपालकें सहभागीयों

सिलीगुढी, भारतकें सहभागीयों